SAMVAD E - JOURNAL
ISSN (Online) :2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 4, Issue-1, January to March : 2026
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

वैदिक मूल्य और हिंदी महाकाव्य

प्रा. डॉ. महेशकुमार जे वाघेला
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
सरकारी विनयनएवं वाणिज्य कोलेज, लीलीया

सारांश (Abstract):

भारतीय साहित्यिक परंपरा में वैदिक चिंतन मूलाधार के रूप में प्रतिष्ठित है। वेदों में निहित 'ऋत', 'सत्य', 'धर्म', 'यज्ञ', 'त्याग', 'समन्वय' और 'विश्वबंधुत्व' जैसे जीवन-मूल्य भारतीय संस्कृति की आत्मा रहे हैं। हिंदी महाकाव्य परंपरा, विशेषतः रामचरितमानस, साकेत,कामायनी, उर्वशी आदि में इन वैदिक मूल्यों का पुनर्स्मरण और पुनर्पाठ स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध-लेख का उद्देश्य यह विश्लेषित करना है कि किस प्रकार हिंदी महाकाव्यों ने वैदिक जीवन-दृष्टि को आधुनिक संदर्भों में पुनर्स्थापित किया है। यह अध्ययन तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि हिंदी महाकाव्य केवल ऐतिहासिक आख्यान नहीं हैं, बल्कि वे वैदिक मूल्यों की पुनर्रचना के माध्यम से समकालीन समाज को नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक दिशा प्रदान करते हैं।

*वैदिक परंपरा में 'यज्ञ' केवल कर्मकांड नहीं, बल्कि**स्वार्थ का परित्याग**और**समष्टि के लिए अर्पण**है। मैथिलीशरण गुप्त केसाकेतमें उर्मिला का विरह और लक्ष्मण का त्याग इसी 'यज्ञ' भावना का आधुनिक रूप है। इसी प्रकार, दिनकर कीउर्वशीकाम और अध्यात्म के द्वंद्व के बीच उस 'ऊर्जा' की खोज करती है, जो ऋग्वैदिक काल के पुरुरवा-उर्वशी आख्यान से प्रेरित होकर भी समकालीन मनुष्य की आध्यात्मिक पिपासा को शांत करती है।*

*वैदिक मंत्र**"वसुधैव कुटुंबकम्"**और**"संगच्छध्वं संवदध्वं"** (साथ चलें, साथ बोलें) का स्वर हिंदी महाकाव्यों में 'विश्वबंधुत्व' और 'लोक-संग्रह' के रूप में दिखाई देता है। ये काव्य केवल राजाओं की कथाएँ नहीं हैं, बल्कि ये समाज को एक सूत्र में पिरोने वाले नैतिक प्रतिमान (Paradigm) गढ़ते हैं।अतः ये महाकाव्य वैदिक विरासत और आधुनिक मानवता के बीच एक सेतु की भाँति कार्य करते हैं, जो आज भी समाज को आध्यात्मिक और सामाजिक संबल प्रदान कर रहे हैं।*

***बीज शब्द**)Keywords):वैदिक मूल्य, हिंदी महाकाव्य, मानवतावाद, सांस्कृतिक चेतना।*

पूर्व भूमिका:

भारतीय वाङ्मय में वेदों को ज्ञान के आदि स्रोत के रूप में स्वीकार किया गया है, जो न केवल धार्मिक अनुष्ठानों का संकलन हैं, बल्कि जीवन जीने की एक पूर्ण कला और दार्शनिक पद्धति का आधार भी हैं। वैदिक मूल्य, जिनमें ऋत, सत्य, धर्म, तप और पुरुषार्थ प्रमुख हैं, सहस्रों वर्षों से भारतीय समाज की नैतिक और आध्यात्मिक रीढ़ रहे हैं। हिंदी साहित्य की महाकाव्य परंपरा, जो आदिकाल से आधुनिक काल तक विस्तृत है, इन शाश्वत मूल्यों के प्रति निरंतर सजग रही है। महाकाव्य केवल ऐतिहासिक या काल्पनिक कथाओं का संग्रह नहीं होते, बल्कि वे 'जातीय जीवन और सामाजिक चेतना के भावसन का सांस्कृतिक प्रयास' होते हैं। इस प्रतिवेदन में

वैदिक मूल्यों के दार्शनिक आधार और हिंदी के प्रमुख महाकाव्यों—जैसे 'पृथ्वीराज रासो', 'रामचरितमानस', 'साकेत', 'कामायनी', 'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी'—में उनके प्रकटीकरण एवं रूपांतरण का गहन विश्लेषण किया गया है। यह विश्लेषण न केवल साहित्य के क्षेत्र में इन मूल्यों की उपस्थिति को दर्शाता है, बल्कि समकालीन वैश्विक चुनौतियों के समाधान में इनकी प्रासंगिकता को भी रेखांकित करता है।

वैदिकमूल्यों का दार्शनिक विन्यासः ऋत और सत्य की आधारशिला

वैदिक दर्शन का सबसे मौलिक और सूक्ष्म सिद्धांत 'ऋत' (Rta) है। ऋत का अर्थ उस ब्रह्मांडीय और सार्वभौमिक नियम से है जो सृष्टि की प्रत्येक गतिविधि को नियंत्रित करता है, चाहे वह ग्रहों की गति हो, ऋतुओं का चक्र हो या मानवीय आचरण की नैतिक व्यवस्था हो। ऋत एक ऐसी 'बाध्यकारी शक्ति' है जो व्यवस्था को अनिवार्य बनाती है और सामाजिक जीवन में निरंतरता का संचार करती है। यह केवल भौतिक नियम नहीं है, बल्कि अस्तित्व के पीछे का 'आध्यात्मिक या आंतरिक सत्य' है।

ऋत का मानवीय संस्करण 'सत्य' (Satya) के रूप में प्रकट होता है। जहाँ ऋत ब्रह्मांड का नियम है, वहीं सत्य जीवन की वह वास्तविकता है जिसे व्यक्ति अपने विचारों, वाणी और कर्म में उतारता है। उपनिषदों ने इसी ऋत को व्यक्तिगत स्तर पर 'धर्म' (Dharma) के रूप में रूपांतरित किया, जो व्यक्ति को ब्रह्मांडीय व्यवस्था के साथ संरेखित करने का माध्यम बना। 'धर्म' शब्द की निष्पत्ति 'धृ' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'धारण करना'। अतः धर्म वह तत्व है जो समाज को धारण करता है और उसे विघटन से बचाता है।

इन मूल्यों का अंतर्संबंध इतना गहरा है कि एक के बिना दूसरे की पूर्णता संभव नहीं है। उदाहरण के लिए, धर्म के बिना 'काम' (इच्छा) केवल पशुवत भोग बनकर रह जाता है, जबकि धर्म के नियंत्रण में वही काम आनंद और सृजन का स्रोत बनता है। इसी प्रकार, पुरुषार्थ के चतुष्टय में धर्म को आधारभूत माना गया है, क्योंकि इसके अभाव में अर्थ और काम विनाशकारी हो सकते हैं।

रामचरितमानसः मर्यादा पुरुषोत्तम के माध्यम से वैदिक मूल्यों का लोकव्यापीकरण

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' हिंदी साहित्य का वह देदीप्यमान ग्रंथ है जिसने वैदिक दर्शन को जन-जन की भाषा में अनुवादित कर दिया। श्रीराम का चरित्र वेदों में वर्णित 'आदर्श मनुष्य' की साक्षात प्रतिमूर्ति है, जो प्रत्येक परिस्थिति में 'मर्यादा' का पालन करते हैं। मानस में राम को आज्ञाकारी पुत्र, पत्नीव्रता पति, स्नेही भ्राता और गुरु-पालक शिष्य के रूप में स्थापित किया गया है, जो 'राजधर्म' की रक्षा के लिए व्यक्तिगत सुखों का परित्याग करने में संकोच नहीं करते।

रामराज्यः वैदिक सामाजिक समरसता का आदर्श

तुलसीदास ने 'रामराज्य' की जो परिकल्पना प्रस्तुत की, वह वास्तव में वैदिक मूल्यों के व्यावहारिक अनुप्रयोग का शिखर है। रामराज्य में न्याय, समानता और सुशासन के वे सिद्धांत निहित हैं जहाँ किसी भी नागरिक को शारीरिक, दैविक या भौतिक कष्ट (ताप) नहीं था। यह व्यवस्था इस वैदिक मान्यता पर आधारित थी कि जब राजा धर्मानुसार शासन करता है और समाज सत्य के मार्ग पर चलता है, तो प्रकृति भी सकारात्मक सहयोग करती है।

तुलसीदास ने राम के माध्यम से शबरी, केवट और निषादराज जैसे पात्रों के साथ जो प्रेमपूर्ण व्यवहार दिखाया, वह वेदों की उस शिक्षा को चरितार्थ करता है जहाँ संपूर्ण मानवता को एक ही परिवार माना गया है। यह सामाजिक समरसता वैदिक 'सांमनस्य' और 'अविद्वेषम्' (द्वेष न करना) के आदर्शों पर आधारित है।

पुरुषार्थ और संस्कार परंपरा

'रामचरितमानस' में मानव जीवन के चार पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—का सुंदर समन्वय मिलता है। जहाँ राम धर्म के प्रतीक हैं, वहीं उनके शासन में अर्थ और काम का धर्म-सम्मत उपभोग दिखाया गया है। इसके अतिरिक्त, वैदिक साहित्य में वर्णित 16 संस्कारों (गर्भाधान से अंत्येष्टि तक) का महत्व भी मानस के कथानक में ओतप्रोत है, जो व्यक्तित्व निर्माण की एक सुव्यवस्थित योजना प्रस्तुत करते हैं

आदिकालीन वीरता और क्षत्रिय धर्मः पृथ्वीराज रासो का विश्लेषण

हिंदी के प्रथम महाकाव्य के रूप में प्रसिद्ध 'पृथ्वीराज रासो' में वैदिक वीरता और क्षत्रिय धर्म का एक विशिष्ट स्वरूप दिखाई देता है। यद्यपि यह काल सामंती मूल्यों से प्रभावित था, किंतु वीरता का मूल स्रोत वही वैदिक आदर्श था जहाँ युद्ध को केवल रक्तपात नहीं, बल्कि 'धर्म-युद्ध' और 'स्वामि-धर्म' के रूप में देखा जाता था।

शौर्य और शरणागत रक्षा

रासो के अनुसार, क्षत्रिय का अर्थ केवल युद्ध करना नहीं, बल्कि 'सत्य और न्याय' के लिए लड़ना है। पृथ्वीराज चौहान के चरित्र में उस वैदिक वीरता का समावेश है जो शरणागत की रक्षा को अपना परम धर्म मानती है। जब शहाबुद्दीन गौरी के विद्रोही सामंत पृथ्वीराज की शरण में आते हैं, तो वह युद्ध की निश्चितता को जानते हुए भी 'शरणागत वत्सलता' के वैदिक मूल्य का त्याग नहीं करते। यहाँ वीरता का संबंध व्यक्तित्व के गुणों से है, न कि केवल जन्म से।

क्षत्रिय धर्म के इस स्वरूप को निम्न प्रकार से समझा जा सकता हैः

- **स्वामि-धर्मः**इसे योद्धा का 'परम आभूषण' माना गया है, जो कर्म के बंधनों से मुक्ति दिलाने वाला मार्ग है।
- **अनुशासन और व्रतः**युद्धभूमि में प्राण देना एक आध्यात्मिक व्रत के समान था, जो वैदिक यज्ञ परंपरा के ही समानांतर है।
- **सांस्कृतिक चेतनाः**रासो में वर्णित विवाह और सामाजिक उत्सवों में वैदिक रीति-रिवाजों की प्रधानता दिखाई देती है, जो तत्कालीन समाज की हिंदू पहचान को सुदृढ़ करती है।

आधुनिक युग में वैदिक मूल्यों का पुनर्पाठः कामायनी और साकेत

आधुनिक काल में जब विज्ञान और भौतिकतावाद ने मनुष्य को आंतरिक रूप से खंडित कर दिया, तब छायावादी कवियों ने पुनः वैदिक दर्शन की ओर रुख किया। जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' और मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत' इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

कामायनीः समरसता और आनंदवाद का दर्शन

'कामायनी' का आधार ऋग्वेद और शतपथ ब्राह्मण की जल-प्रलय वाली कथा है। प्रसाद जी ने मनु के माध्यम से आधुनिक मानव के उस द्वंद्व को चित्रित किया है जहाँ वह बुद्धि और हृदय के बीच असंतुलन के कारण विनाश की ओर अग्रसर होता है। 'कामायनी' का केंद्रीय संदेश वैदिक 'आनंद' और 'समरसता' (Harmony) है।

प्रसाद जी का मत है कि भौतिक समृद्धि मात्र जीवन का लक्ष्य नहीं है, क्योंकि यह अंततः अकर्मण्यता और अहंकार की ओर ले जाती है। आनंद की प्राप्ति तभी संभव है जब व्यक्तिः

1. **हृदय और बुद्धि का समन्वयः**केवल बुद्धि (इड़ा) शुष्क तर्क पैदा करती है और केवल हृदय (श्रद्धा) भावुकता, अतः दोनों का संतुलन आवश्यक है।
2. **विषमता का त्यागः**जहाँ समरसता है, वहाँ सुख है। सामाजिक, मानसिक और आत्मिक स्तर पर विषमता ही समस्त दुखों का कारण है।

3. **नारी का सह-अस्तित्व**:कामायनी में नारी (श्रद्धा) को विवेक और बुद्धि की अधिष्ठात्री के रूप में चित्रित किया गया है, जिसके सहयोग के बिना मानवता का विकास संभव नहीं है।

साकेत: उर्मिला का तप और उपेक्षित मूल्यों की पुनर्स्थापना

मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' के माध्यम से रामायण के उन पात्रों को महत्व दिया जिन्हें परंपरा ने उपेक्षित कर दिया था। उर्मिला का चरित्र वैदिक 'तप' और 'त्याग' की एक नवीन परिभाषा गढ़ता है। उर्मिला का विरह केवल वियोग नहीं, बल्कि एक 'साधना' है। वह स्वयं को 'विरह की अग्नि' में तपाकर एक तपस्विनी के रूप में उभरती है।

उर्मिला का तप निम्नलिखित आयामों में वैदिक मूल्यों से जुड़ता है:

- **मूक सेवा और सहनशीलता**:लक्ष्मण वन में राम-सीता की सेवा कर रहे हैं, किंतु उर्मिला घर में रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए विरह सह रही है, जो एक कठिनतर तप है।
- **कर्तव्य परायणता**:वह लक्ष्मण के कर्तव्य मार्ग में बाधा नहीं बनती, बल्कि अपनी वेदना को 'सखी' बनाकर समाज के कल्याण की कामना करती है।
- **परोपकारी भावना**:साकेत के नवम सर्ग में उर्मिला शिशिर ऋतु से निवेदन करती है कि वह जंगलों और पहाड़ों के निवासियों को पीड़ा न पहुँचाए, बल्कि जो कुछ कंपन उसे चाहिए, वह उर्मिला के शरीर से ले ले। यह 'सर्वभूतहिते रतः' (सभी जीवों के हित में संलग्न) के वैदिक आदर्श का उत्कृष्ट उदाहरण है।

कुरुक्षेत्र और उर्वशी: धर्म, युद्ध और काम की दार्शनिक मीमांसा

रामधारी सिंह दिनकर ने अपने महाकाव्यों में वैदिक मूल्यों को अत्यंत सूक्ष्म और बौद्धिक धरातल पर परखा है। जहाँ 'कुरुक्षेत्र' न्याय और हिंसा के द्वंद्व पर विचार करता है, वहीं 'उर्वशी' प्रेम और अध्यात्म के अंतर्संबंधों को उजागर करती है।

कुरुक्षेत्र: युद्ध और शांति का धर्मशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

'कुरुक्षेत्र' में युधिष्ठिर और भीष्म का संवाद वास्तव में 'अहिंसा' और 'कर्तव्य' (Dharma) के बीच का वैदिक द्वंद्व है। युधिष्ठिर युद्ध के बाद उत्पन्न विभीषिका से ग्लानिग्रस्त हैं, जबकि भीष्म उन्हें समझाते हैं कि अन्याय को सहना पाप है और जब शांति के सभी मार्ग बंद हो जाएँ, तब रण ही धर्म बन जाता है।

भीष्म के माध्यम से दिनकर ने जो तर्क दिए हैं, वे वैदिक न्यायशास्त्र पर आधारित हैं:

- **न्याय की सर्वोच्चता**: "चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है।" अर्थात युद्ध का कारण वह व्यक्ति है जिसने अन्याय किया, न कि वह जिसने न्याय के लिए हथियार उठाए।
- **अहिंसा का वास्तविक अर्थ**:कायरता को अहिंसा का नाम नहीं दिया जा सकता। जब राष्ट्र और धर्म संकट में हो, तब क्षत्रिय का शस्त्र ही न्याय की रक्षा करता है।
- **इंद्रिय निग्रह**:भीष्म युधिष्ठिर को 12 महत्वपूर्ण उपदेश देते हैं, जिनमें मन को वश में रखना, घमंड न करना और स्वाद के बजाय स्वास्थ्य के लिए भोजन करना जैसे वैदिक नियम शामिल हैं।

उर्वशी: काम का आध्यात्मिक रूपांतरण (कामाध्यात्म)

'उर्वशी' में दिनकर ने वैदिक 'काम' (इच्छा/प्रेम) को आध्यात्मिक गरिमा प्रदान की है। उन्होंने इसे 'इंद्रियों के मार्ग से अतींद्रिय धरातल' तक पहुँचने की प्रक्रिया बताया है। जहाँ पारंपरिक संतों ने काम को केवल बंधन माना, दिनकर ने इसे अद्वैत अनुभूति का एक साधन सिद्ध किया।

उर्वशी और पुरुरवा के माध्यम से काम दर्शन के विभिन्न स्तरों का विश्लेषण किया गया है:

- **सनातन नारी और पुरुष**:उर्वशी सनातन नारी की प्रतीक है जो पुरुष को भौतिकता और आकर्षण की ओर खींचती है, जबकि पुरुरवा सन्यास और भोग के बीच झूलता हुआ 'सनातन पुरुष' है।
- **द्वंद्व से मुक्ति**:दिनकर का मत है कि जब प्रेम अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचता है, तब वह इंद्रियों से परे (अतींद्रिय) लोक में पहुँच जाता है जहाँ कोई प्रश्न या शंका शेष नहीं रहती।
- **सृजनात्मक काम**:काम यदि धर्म के अधीन है, तो वह केवल पशुवत प्रवृत्ति नहीं, बल्कि ईश्वर तक पहुँचने का एक मार्ग बन सकता है।

वैदिक पुरुषार्थ चतुष्टय: जीवन के उद्देश्यों का एकीकृत ढांचा

वैदिक मूल्यों की सबसे व्यावहारिक अभिव्यक्ति 'पुरुषार्थ चतुष्टय'—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—में होती है। हिंदी महाकाव्यों ने इन चारों लक्ष्यों के बीच संतुलन स्थापित करने पर निरंतर बल दिया है। वेदों के अनुसार, जीवन की पूर्णता तभी संभव है जब इन चारों में से किसी की भी उपेक्षा न की जाए, परंतु धर्म को इनका नियामक माना जाए।

महाकाव्यों का एक मत से यह संदेश है कि 'यतो धर्मस्ततो जयः' अर्थात जहाँ धर्म है, वहाँ विजय सुनिश्चित है। रामायण में रावण की मृत्यु और महाभारत में कौरवों का विनाश इसी तथ्य का प्रमाण है कि धर्मविहीन शक्ति अंततः विनाशकारी होती है।

सकते हैं। 'सादा जीवन उच्च विचार' और 'ब्रह्मचर्य' जैसे मूल्यों का पालन करके छात्र मानसिक एकाग्रता और चरित्र की दृढ़ता प्राप्त कर सकते हैं।

निष्कर्ष: एक अखंड मानवीय चेतना का भविष्य

हिंदी महाकाव्यों ने वैदिक मूल्यों को केवल जीवित ही नहीं रखा, बल्कि उन्हें प्रत्येक युग की चुनौतियों के अनुरूप पुनर्व्याख्यायित भी किया है। 'रामचरितमानस' ने जहाँ धर्म को मर्यादा और लोक-संग्रह से जोड़ा, वहीं 'कामायनी' ने उसे मानसिक शांति और समरसता का मार्ग बताया। 'कुरुक्षेत्र' ने धर्म को न्याय के कठोर धरातल पर परखा, तो 'उर्वशी' ने उसे प्रेम की गहराइयों में खोजा।

इन सभी महाकाव्यों का सामूहिक स्वर यह है कि मानवीय गरिमा केवल भौतिक विकास में नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति में निहित है। वैदिक मूल्यों—ऋत, सत्य और धर्म—का पुनर्स्मरण हमें एक ऐसी वैश्विक सभ्यता की ओर ले जा सकता है जो न केवल तकनीकी रूप से उन्नत हो, बल्कि मानवीय संवेदनाओं और न्यायपूर्ण व्यवस्था से भी परिपूर्ण हो। वर्तमान युग की समस्याओं, चाहे वे सांप्रदायिकता हों, पर्यावरणीय ह्रास हो या मानसिक तनाव, उन सबका समाधान उन शाश्वत मूल्यों में विद्यमान है जो वेदों की ऋचाओं से निकलकर हमारे महाकाव्यों के पात्रों के माध्यम से आज भी हमें दिशा दिखा रहे हैं।

संदर्भ सूची

- प्रसाद, जयशंकर (1936). कामायनी. भारती भंडार, इलाहाबाद।
- तुलसीदास, गोस्वामी. रामचरितमानस. गीता प्रेस, गोरखपुर।
- द्विवेदी, हजारीप्रसाद (1952). हिंदी साहित्य की भूमिका. राजकमल प्रकाशन।
- गुप्त, मैथिलीशरण. साकेत. साकेत प्रकाशन।
- राधाकृष्णन, एस. (1923). भारतीय दर्शन (Indian Philosophy). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- शुक्ल, रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नागरी प्रचारिणी सभा।
- दयानंद सरस्वती. (2006). ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका. आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट।
- दिनकर, रामधारी सिंह. (2008). उर्वशी. लोकभारती प्रकाशन।

- गुप्त, मैथिलीशरण. (2010). साकेत. साहित्य सदन।
- प्रसाद, जयशंकर. (2009). कामायनी. लोकभारती प्रकाशन।
- राधाकृष्णन, एस. (1996). भारतीय दर्शन (खंड 1). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।